HISTORY

1

पांडुलिपियों के बनाने में चित्रकारों का योगदान

मुगलकाल में पांडुलिपियों की तैयारी में चित्रकार महत्वपूर्ण योगदान देते थे। मुगलकाल की घटनाओं के लेखन के साथ-साथ उन घटनाओं के चित्र भी बनाये जाते थे। इन लेखों के साथ इनसे संबंधित चित्र भी बनाकर लेखों के पास लगाए जाते थे। यह चित्र पुस्तक की शोभा को बढ़ाते थे। यह चित्र राज्यों के बारे में विचारों तथा राजाओं की शक्ति और उनके जीवन के ढंग के बारे में होते थे जिनका लेखों द्वारा स्पष्टीकरण करना कठिन था। अबुल-फजल ने चित्र कला को जादुई कला (Magical Art) बताया। चित्र में वस्तुएँ इस प्रकार दिखाई जाती है जैसे की वो सचमुच की वस्तुएँ हों। सम्राट, उनके दरबार और उनकी प्रजा के बारे में चित्र, सम्राट और उलेमा तथा कट्टरपंथी मुल्लाओं के बीच विरोध का कारण बन जाते थे। कट्टरपंथियों के अनुसार कुरान और हदीस वर्णित नीतों के चित्र बनाने कि इस्लाम आज्ञा नहीं देता परंतु शरीया की व्याख्याएँ समय के साथ-साथ बदलती

सकता है। एशिया के बहुत से मुस्लिम
राज्यों में वहाँ के सम्राटों के दरबारों
में चित्रकार रखे हुए थे जो भी उनके
जीवन और राज्यों के बारे में चित्र
बनाते थे। उदाहरण के लिए ईरान में
सफाविद (Safawid) सम्राट के दरबारों
में बहुत निपुण कलाकार रखे जाते थे
इनको दरबारों में बनाई गई दरबार
शिल्पशाला में प्रशिक्षित किया जाता था।
सम्राट निपुण कलाकारों को संरक्षण
देते थे। सफाविद सम्राट के दरबार
में एक प्रसिद्ध चित्रकार बिहज़ाद था।
जिसकी अपनी चित्र के कारण दूर-दूर
को राज्यों में प्रशंसा होती थी।

ईरान के बहुत से कलाकार मुग़ल सम्राट
के सम्मान और संरक्षण प्राप्त करने के
लिए भारत आए। जीवित वस्तुओं के चित्र
बनाने के प्रश्न पर अकबर और
कट्टरपंथी मुल्लाओं के प्रवक्ताओं में
बहुत विरोध उत्पन्न हो गया। अबुल-फ़ज़ल
अकबर की चित्रकला के विचारों के
बारे में लिखता है कि अकबर ने कहा
की बहुत से ऐसे लोग हैं की
जो चित्रकला से घृणा करते हैं वह
लोग मुझे पसंद नहीं है।

classmate
Date
Page

मैंने विचार में कलाकारों के ईश्वर के पहचान करने की अपनी शैली देखा है जो प्राय यह अनुभव करते हैं कि वे अपने चित्रों को जीवन नहीं दे सकते।